सोमार्थ सामुदायिक सहालकार बोर्ड की दूसरी बैठक कार्यवाही विवरणः

बैठ़क की दिनांक : **सितम्बर 24, 2023**

बैठ़क का स्थान : **एन.जी.एफ. कॉलेज, श्रीनगर, पलवल**

बैठ़क का समय : **प्रातः 10:00 बजे से 12:30 तक**

बैठ़क में उपस्थित बोर्ड के सदस्यगणः

1. डॉ. मंजीत कुमार गोतम, प्रतिनिधि सिविल सर्जन कार्यालय पलवल
2. श्री एल. राजेन्द्र, मनोनीत सदस्य, समुदाय से
3. श्री मंजीत सिंह, सरंपच, ग्राम पंचायत दुर्गापुर
4. श्री नरेन्द्र सिंह, पूर्व सरंपच, ग्राम पंचायत गहलब
5. श्री महाबीर शर्मा, पूर्व सरपंच, ग्राम पंचायत बामनीखेड़ा
6. श्री रामप्रसाद, पूर्व सरपंच, ग्राम पंचायत बहीन,
7. श्री उदय सिंह, पूर्व सरपंच, ग्राम पंचायत फिरोजपुर राजपूत
8. श्री याहान खांन, सरपंच ग्राम पंचायत खिल्लुका
9. श्री मुकट लाल शर्मा, मनोनीत सदस्य, समुदाय से
10. श्रीमती आशा रानी ए.एन.एम, मनोनीत सदस्य, स्वास्थ्य विभाग

बैठ़क में उपस्थित इनक्लन एवं सोमार्थ स्टॉफः

1. प्रोफेसर (डॉ.) नरेन्द्र कुमार अरोड़ा
2. डॉ. मनोज कुमार दास
3. डॉ. लीना सुशान्त
4. डॉ. शिखा दीक्षित
5. डॉ. हेमा नलिनी
6. डॉ. पिंकी

7. श्री राकेश कुमार सिंह
8. श्री रोकी कुमार
9. श्री गौरव बन्याल
10. श्री वीरेन्द्र सिंह रावत
11. श्री जितेन्द्र

कार्यवाही विवरणः

कार्यक्रम की शुरूआत 10:30 बजे हुआ, सबसे पहले इनक्लेन–सोमार्थ के मुखिया प्रोफेसर नरेन्द्र कुमार अरोड़ा जी ने उपस्थित बोर्ड के सभी सदस्यों का सोमार्थ परिवार की तरफ से आज की बैठक में भाग लेने के लिए अभिवादन किया, उनके सहयोग के लिए आभार प्रकट किया, और उन्होंने यह भी बताया यह पिछले 14 वर्षो का सोमार्थ का सफर आप लोगो के सहयोग के बिना संभव नही होता, और उन्होंने ने आशा प्रकट किया कि इसी तरह से आप सभी का प्यार, सहयोग हमें आगे भी मिलता रहेगा। इसके बाद उन्होंने उपस्थित बोर्ड के सदस्यो सहित सभी लोगो का अपना–2 परिचय देने के लिए आग्रह किया और सभी ने अपना–अपना परिचय दिया।

इसके बाद डॉ. शिखा दीक्षित ने प्रोफेसर अरोड़ा जी का धन्यवाद किया, एवं आज के कार्यक्रम के विषय में बताया।

आज के बैठ़क के प्रमुख मुद्दे (विषय):

- सोमार्थ के द्वारा किए गए शोध कार्यो से बोर्ड सदस्यों को अवगत कराना,
- स्वास्थ्य कार्यक्रमो में सोमार्थ की भागीदारी एवं योगदान,
- समुदाय के लोगो के अनुसार स्थानीय स्वास्थ्य की प्राथमिकताएं,
- सोमार्थ के चौदहवें स्थापना दिवस की जानकारी एवं बोर्ड के सदस्यों को भाग लेने के लिए आमांत्रित करना,
- आज के मीटिंग के महत्वपूर्ण बातो को संक्षेप में बताना एवं काम के दौरान आने वाली चुनौतियां,
- बोर्ड की अगली मीटिंग के विषय में सदस्यों को अवगत कराना एवं धन्यवाद,
- भोजन (लंच)

डॉ. शिखा ने सोमार्थ के द्वारा किए गए कार्यो के विषय में बताने से पहले सोमार्थ शब्द का अर्थ, दर्शन (फिलास्पी) एवं दृष्टिकोण के विषय में बताया कि सामाजिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक विकास का समाज के लोगों के स्वास्थ्य पर कैसे इसका प्रभाव पड़ता है, और ''विकास'' एवं ''स्वास्थ्य'' में कैसे समन्वय स्थापित किया जाए, इस विषय पर भी सोमार्थ शोध कार्य कर रहा है, साथ–साथ स्वास्थ्य सम्बन्धी भविष्य की चुनौतियां क्या–क्या हो सकती है, उसका सामना करने लिए हम अपने को कैसे तैयार करे, आदि के विषय को लोगो को बताया।

इसके बाद उन्होंने सोमार्थ द्वारा पिछले 14 वर्षो में किए गए कार्यो का लेखा–जोखा बोर्ड के सदस्यों के साथ सांझा, 2009 में सोमार्थ की शुरूआत किया गया था, 2010 में बच्चों में मानसिक समस्या पर काम किया, 2012 में रोटा वॉयरस, सोमार्थ क्लीनिक की शुरूआत, घर के अन्दर होने वाले प्रदूषण, 2013 में बच्चों में मोटापा, 2014 में गाँव का मैप तैयार करना (जी.आई.एस. मैपिंग) बेसलाइन जनगणना, 2015 में वॉटर, सैनिटेशन एवं हाइजिन (स्वच्छता), 2016 में सोमार्थ क्षेत्र का फोटोग्राफी, 2017 में सोशल कैपिटल नवयुवकों में, 2018 नवजात शिशु की देखभाल, 2020 में डेमेंशियां (भूलने की समस्या), कोविंड पर जागरूकता, डेंगू, चिकन गुनिया, 2021 में गाँवो का मैपिंग एवं जनगणना का दूसरा चरण, बच्चों में मानसिक समस्या दूसरा चरण, कोविड वैक्सिन ट्रायल, 2022 में आयुष्मान भारत कार्यक्रम में सहयोग एवं टी.बी. मरीजो का देखभाल निकक्षय कार्यक्रम में योगदान 2023 में ए.एम.बी. लकक्ष्य, जी. वी.डी.एन. एवं एम.एम.एस. कार्यक्रम।

इसके साथ–साथ डॉ. शिखा जी ने यह भी बताया कि 2012 से 2022 के बीच किस तरह जनसंख्या में बदलाव आया है।

1. इस बीच लगभग 11 प्रतिशत जनसंख्या सोमार्थ के गाँवो की बढ़ी है,
2. सोमार्थ किस तरह स्थानीय युवाओं को न केवल रोजगार के अवसर प्रदान कर रहा है, बल्कि उनका समग्र बौद्धिक (स्किल) विकास भी कर रहा है,
3. साथ में स्थानीय स्वास्थ्य विभाग के साथ प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत कार्यक्रम में लाभार्थीयों का कार्ड बनवाना, कार्यक्रम की जानकारी लोगो तक पहुंचाना,
4. इसी तरह टी.बी मुक्त भारत अभियान में सोमार्थ क्षेत्र के सभी मरीजों का देखभाल करना,
5. कोविड़ के दौरान गाँव वालो को कोविड़ से बचने एवं हो जाने पर क्या–क्या सावधानियां रखनी है, जनजागरण करना, गाँव के डॉक्टरों को सही ईलाज के लिए उनका ओरिएन्ट करना, आदि बताया गया,
6. कोविड़ वैक्सीन के प्रभाव को लेकर एक सदस्य ने पूछा कि क्या हार्ट फैलियर इसका एक दुष्प्रभाव है? इसका जबाव देते हुए प्रोफेसर अरोड़ा जी ने हार्ट फैलियर का कारण कोविड़ वैक्सीन नही है बताया, हार्ट फैलियर पहले भी होते थे पर अब लोग पहले से ज्यादा जागरूक है।
7. सोमार्थ क्लीनिक में किस तरह हर साल 12 से 15 हजार लोगों का ईलाज हो रहा है,
8. चर्चा के दौरान बोर्ड के सदस्य श्री नरेन्द्र सिंह जी ने सवाल उठाया कि हथीन के लोगों का खटेला क्लीनिक पर पहुंचने में परेशानी होती है, इसलिए एक क्लीनिक हथीन में भी होना चाहिए। इसका जबाव देते हुए प्रोफेसर अरोड़ा जी ने बताया कि गाँव स्तर पर कार्य करने के लिए अच्छे डॉक्टर तैयार नही होते, जिसके चलते सोमार्थ क्लीनिक नही खोल पा रहा है। सामुदायिक सलाहकार बोर्ड ने कहां कि वे कोई न कोई डॉक्टर जरूर बताएंगे जो गाँव स्तर पर काम करने के लिए तैयार हो।
9. डॉ. मंजीत ने सुझाव दिया कि क्लीनिक में डॉक्टर के लिए सोमार्थ को रिटायर्ड डॉक्टर एसोसिएयन से सम्पर्क करना चाहिए।
10. इसके साथ–साथ सोमार्थ किस तरह अभी इन पाँच विषयो पर काम कर रहा है,

(क) दो महीने से छोटे बच्चों में होने वाले संभावित गंभीर वैक्टेरियल इन्फेक्शन के कारण एवं निवारण पर काम कर रहा है, जिसमें 2–59 माह तक के बच्चों में निमोनियां का देखभाल अस्पताल में कैसे हो रहा है।

(ख) दो साल से बड़े बच्चों में खून की कमी (कारण एवं निवारण) एवं दो साल से 10 साल से बड़े बच्चों में नस तंलिका विकार (कारण एवं निवारण) डॉ. मंजीत ने सवाल उठाया कि गूंगे, बहरे बच्चों को सरकारी अस्पताल पलवल में क्यू रेफर नही किया जाता? जबाव देते हुए डॉ. पिंकी ने बताया कि डॉ. रामेश्वरी के द्वारा यह पता चला कि सरकारी अस्पताल बेरा रूम नही है, इसलिए इन बच्चों को रोहतक रेफर किया जाता है। डॉ. मंजीत में बताया कि अगले 6 महीने में बेरा रूम की सुविधा उपलब्ध हो जाएगी। प्रोफेसर अरोड़ा ने डॉ. मंजीत जी से आग्रह किया कि एन.डी.डी. के टेस्ट सीविल अस्पताल में प्रमाणित किया जाए।

(ग) किशोर एवं किशोरियो में एनीमियां, डायबटीज, हाइपरटेंशन, वी.एम.आई की जांच एवं समुदाय में होने वाले डेंगू, चिकन गुनियां के उपर शोध

(घ) समुदाय में वैक्सिल जनित एवं अन्य कारणो से होने वाले गंभीर परिणामों (अस्पताल में भर्ती एवं मृत्यु) की निगरानी करना एवं समुदाय में कोविड़ बीमारी की रोग प्रतिरोधक क्षमता की जांच (2 वर्ष से उपर उम्र के व्यक्तिओं की)

(ङ) बड़े–बूढ़ो में भूलने की बीमारी पर शोध।

इसके बाद सोमार्थ इस शोध कार्य को आगे ले जाने के लिए जो योजना बनाया है, उसके बारे में बतायाः

1. समुदाय की समस्याओं को राष्ट्रीय एवं राजकीय पॉलीसी एवं प्रोग्राम में लेकर जाना
2. नए शोध के विषयों की खोज कर उन पर शोध का नेतृत्व करना
3. समुदाय को स्वास्थ्य एवं उससे सम्बन्धित समस्याओं से निजात पाने के लिए तैयार करना
4. लोकल स्किल पुल को तैयार करना एवं युवकों को उससे जोड़ना।

स्वास्थ्य कार्यकमो में सोमार्थ की भागीदारी एवं योगदानः

1. प्रधानमंत्री टी.बी. मुक्त भारत अभियान मे लिए गए गाँव
2. स्थानीय युवाओं को प्रशिक्षण एवं रोजगार
3. कोविड़ महामारी के दौरान समुदाय से मिलना एवं गलत अफवाह एवं भ्रातियां को मिटाना एवं लोकल डॉक्टर्स को इलाज में आवश्यक सावधानी
4. आयुष्मान भारत योजना

समुदाय के लोगो के अनुसार स्थानीय स्वास्थ्य की प्राथमिकताएंः

डॉ. शिखा के बाद डॉ. हेमा ने समुदाय के लोगो के अनुसार स्थानीय स्वास्थ्य की प्राथमिकताओं को बोर्ड के सदस्यों के साथ साँझा किया। उन्होंने बताया कि स्थानीय स्वास्थ्य समस्याओं एवं उपलब्ध सेवाओं को जानने और समझने के लिए सोमार्थ ने समुदाय के अलग–अलग समूहों के साथ बातचीत किया, जिसमें प्रमुख समूह इस प्रकार हैः

1. किशोरावस्था– लड़कियों से
2. 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों की माताओ से

3. वृद्धावस्था– बडे–बूढ़े लोगो से

इन सभी ग्रुप के लोगो के साथ गाँवो में जाकर बैठ़के की और उन सभी से यह जानने और समझने का प्रयास किया कि उनसे जुड़ी/सम्बन्धित यानी उनके उम्र के लोगों की स्वास्थ्य सम्बन्धी क्या–क्या बीमारी है, क्या–क्या समस्या है, तो कुछ लोगों ने बीमारी का नाम बताया, कुछ लोगों ने बीमारी का लक्षण बताया, कुछ लोगों ने समस्या के रूप में इसे बताया, कुल मिलाकर निम्नलिखित समस्या एवं बीमारी सामने आया, जैसे– **किशोरावस्था** के लोगों ने यह सारी समस्या बतायाः

1. पारिवारिक स्तर पर किशोरियों के स्वास्थ्य को अनदेखा किया जाता है। केवल आपातकालीन स्थिति में ही उनके स्वास्थ्य की देखभाल की जाती है।
2. एनीमियां की जानकारी के अभाव में किशोरियां एनीमियां के लक्षण होते हुए भी उन्हें पहचान नही पाती है।
3. प्रतिभागियों ने गाँव स्तर पर पीने के पानी और गंदगी की समस्यओं को साँझा किया, जो उनके स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल रही है।

पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की माताएँः

1. प्रतिभागियों ने बताया की उन्हें गभावस्था के दौरान एनीमिया की प्रर्याप्त जानकारी नही होती है।
2. आयरन, कैल्सियम, टैटनेस इंजेक्शन जैसी सुविधाएं हमे अस्पताल एवं आशा/ए.एन.एम द्वारा उपलब्ध करवाई जाती है, पर कभी–कभी अस्पताल में ये दवाईयां उपलब्ध न होने पर बाहर से लानी पड़ती है।
3. प्रतिभागियों ने बताया की सरकारी अस्पताल में हाई रिस्क प्रेगेन्सी और सामन्य डिलीवरी के लिए भी सुविधाएं अच्छी नही हैं इसलिए उन्हें प्राईवेट अस्पताल में जाना पड़ता है।
4. गर्भावस्था एवं प्रसव के दौरान सरकारी कर्मचारियों का व्यवहार सम्मान जनक नही होता है।
5. स्टिलवर्थ–मृत जन्म (जन्म के समय मृत बच्चा पैदा होना) के मामले कुछ केस अपने गाँव में देखने को मिले है। कुछ मामलों में मृत बच्चा पैदा होने पर इसके लिए माँ को ही दोषी ठहरा दिया जाता है।
6. बच्चों में एनीमियां, नजला, मोतीजीरा (टाईफाइड) और पेट से जुड़ी समस्याएं आमतौर पर देखने को मिलती है।
7. प्रतिभागियों ने बताया की गाँव स्तर पर बच्चों के स्वास्थ्य की सुविधाएं नही है। स्वास्थ्य की हर छोटी से छोटी जरूरतों के लिए ब्लॉक स्तर के प्राइवेट अस्पताल में जाना पड़ता है।
8. बच्चें के विकास की निगरानी, बाल स्वास्थ्य का आंकलन एक वर्ष की आयु तक किया जाता है, पर माताओं को आमतौर पर बच्चे की स्वास्थ्य स्थिति बच्चे की पोषण सम्बन्धी आवश्कताएं के बारे में पूरी जानकारी नही दी जाती है।
9. उन्हें एनीमिया के बारे में जानकारी भी कम है। छोटे बच्चों के लिए आयरन की दवा की कमी है।

वृद्धावस्थाः बड़े–बूढ़े लोगो ने बताया किः

1. घूटने की समस्या सबसे ज्यादा है, घूटनों में दर्द रहता है, चलने, उठ़ने, बैठने में परेशानी होती है, जोड़ो में दर्द होता है,
2. हवा मार देता है (लकवा), शरीर का एक हिस्सा या कुछ भाग जैसे– हाथ, पाँव या आधा शरीर का हिस्सा/भाग काम नही करता, सुन्न हो जाता है, यह समस्या अचानक होती है।
3. सुगर, ब्लड प्रेशर, हॉर्ट अटैक (दिल का दौरा) अचानक व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है, आदि बताया कि आज कल गाँवों में खूब हो रहा है। मोतिया बिन्द–आखों से कम दिखाना, त्वचा की एलर्जी, एवं यादाश्त की कमी आदि समस्या भी बताया।
4. बड़े–बूढो के स्वास्थ्य सम्बन्धी मुद्दो/समस्याओं का बड़े पैमाने पर उपेक्षा की जाती है, स्वास्थ्य की देखभाल में गुणवत्ता की कमी, दवाओं की कमी, इमरजेंसी केयर के लिए गाँव स्तर पर कोई सुविधा नही है। इमरजेंसी में गाँव में लोग अपनी गाड़ी का इस्तेमाल करते है। पलवल प्राईवेट अस्पताल में जाते है।

इस तरह समुदाय में इन सभी वर्ग के लोगों से बातचीत के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख मुद्दो पर और आगे कार्य करने की आवश्यकता महसूस की गईः

1. एनीमिया (खून की कमी) मुक्त भारत पर शोध,
2. प्रसव के दौरान मातृ स्वास्थ्य देखभाल में सुधार करना, जो मृत–जन्म की पहचान करने में मद्द करता है,
3. प्रसव कक्ष और मैटरनीटी आपरेशन थिएटर में देखभाल की गुणवत्ता में सुधार
4. सुविधा आधारित आपातकालीन देखभाल को बेहतर करने के लिए काम करना

इस तरह इन सभी मुद्दो पर बोर्ड के सदस्यो को अपना–अपना राय/विचार रखने के लिए आग्रह किया गया। सभी सदस्यो ने इन मद्दो पर अपनी सहमति प्रकट किया और कहां कि आजकल यही सारी समस्याएं गाँवो में हो रही है, आप बिल्कुल सही दिशा में सोच रहे है, यह सभी मुद्दे गाँव से ही निकलकर आया है, वैसे भी आपने गाँव में सभी वर्ग के लोगों को अपना विचार रखने के लिए शामिल किया है, यह सराहनीय है, खासकर बड़े–बूढ़ो की समस्या पर ध्यान दिया है, और उस पर काम कर रहे है। बारी–बारी से सभी उपस्थित सदस्यों ने अपना विचार रखा।

- सामुदायिक सलाहकार बोर्ड के एक सदस्य श्री मुकुट लाल शर्मा जी ने अपना विचार प्रकट करते हुए कहां कि सोमार्थ ने हमारे स्वास्थ्य सुधार और भलाई के लिए जो हमारे गाँव को चुना है, इसके लिए पूरी टीम को धन्यवाद करते है। आगे उन्होंने कहां कि हमारे गाँवों के बच्चों, माताओं, युवाओ और बुजुर्गो के स्वास्थ्य के लिए जो सोमार्थ ने योगदान दिया है वो काबिल–ए–तारिफ है। अंत में उन्होंने कहाँ कि सोमार्थ को गाँव स्तर पर किसी भी प्रकार की परेशानी आती है, तो सामुदायिक सलाहकार बोर्ड हमेशा सहयोग करता रहेगा।
- इसके अलावा श्री राजेन्द्र जी ने बड़े–बूढ़ो में घूटने की समस्या, महिलाओं में खून की कमी का मुद्दा भी उठाया।
- डॉ. मंजीत ने इस क्षेत्र में मलेरियां की समस्या इस वर्ष काफी कम रही है, ऐसा बताया, उन्होंने बताया कि, डेंगू के मरीज अभी बढ़ रहे है।

- श्री महाबीर शर्मा, श्री याहान खांन, श्री उदय सिंह, श्री रामप्रसाद आदि ने सोमार्थ के कार्यो की सराहना किया, और आगे शोध का जो विषय है, उसको समाज की जरूरत के अुनसार बताया, खासकर महिलाओं एवं लडकियों में खून की कमी, जच्चा–बच्चा कार्यक्रम, बड़े–बूढ़ो में भूलने/यादश्त कम होने की समस्या, एमरजेंसी सेवाओ में सुधार आदि पर ओर काम करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

इसके बाद डॉ. पिंकी ने सोमार्थ के चौदहवें स्थापना दिवस के बारे में बताते हुए कहां कि सोमार्थ हर वर्ष 10 अक्टूबर को स्थापना दिवस के रूप में मनाता रहा है। लेकिन कोविड़ के कारण पिछले 3 वर्षो से स्थापना दिवस नही मनाया गया। इस वर्ष सोमार्थ एडवांस कॉलेज में अपना चौदहवां स्थापना दिवस मना रहा है। इसके लिए आप सभी को सादर आमांत्रित किया जाता है। आशा करते है कि आप सोमार्थ स्थापना दिवस में बढ़ चढ़कर भाग लेगें।

प्रोफेसर अरोड़ा ने सामुदायिक बोर्ड की मीटिंग की महत्वपूर्ण बातो को संक्षेप में बताते हुए कहां कि सोमार्थ अलग–अलग आयु वर्ग के साथ एनीमियां पर शोध करेगा। आगे उन्होंने कहा कि बुजुर्गो में अवसाद की समस्या देखने को मिल रही है। जिसे हमें नजर अंदाज नही करना चाहिए। खासकर बुजुर्ग महिलाओं में अवसाद की समस्या को दूर करने के लिए महिला पंचायतो को बढ़ावा देना चाहिए ताकि सामाजिक मेलझोल बना रहे। अंत में उन्होंने कहां कि 10 अक्टूबर को सोमार्थ स्थापना दिवस पर हम इन सभी मुद्दों पर चर्चा करेंगे, और हृदय रोग, लखवा एवं जोड़ो के दर्द पर मुख्यतः चर्चा होगी।

अंत में डॉ. लीना ने सामुदायिक सहालकार बोर्ड की अगली मीटिंग को जनवरी 2024 के पहले सप्ताह में करने का प्रस्ताव रखा, सभी सदस्यों ने अपनी सहमति दी और कहां कि तारीख तय करके हमें बता देना, कोई परेशानी नही हैं।

इसके बाद डॉ. लीना एवं अरोड़ा जी ने सभी सदस्यों का धन्यवाद किया और खाने के लिए आमंत्रित किया। इसी के साथ दूसरे सामुदायिक बैठ़क का समापन हो गया।